अध्याय - 15

राष्ट्रीय एकता एवं सौहार्द के प्रतीक मौलाना अबुल कलाम आजाद

आरंभिक जीवन

मौलाना अबुल कलाम आजाद का जन्म मक्का में प्रतिष्ठित धर्म गुरूओं के एक परिवार में 11 नवम्बर 1888 ई० को हुआ था। इनके पिता का नाम मौलवी खैरूद्दीन एवं माता का नाम बीबी आलिया था। इनके बचपन का नाम माहिउद्दीन था। ये बचपन से ही प्रखर बुद्धि, रचनाशील व्यक्तित्व एवं ओजस्वी वक्तृत्व कला के माहिर थे। प्रखर वाणी के कारण लोग उन्हें ''अबुल कलाम'' कहने लगे। धार्मिक मामलें में दक्षता के कारण उन्हें मौलाना कहा गया।

मौलाना अबुल कलाम आजाद

राष्ट्रीय आंदोलन में प्रवेश एवं भूमिका

मौलाना आजाद का परिवार 1897 ई० में मक्का से कलकत्ता आकर बस गया। जैसे–जैसे मौलाना आजाद ने युवावस्था में प्रवेश किया इनका संपर्क राष्ट्रीय आंदोलन के आदर्शो से हुआ। 1905 ई० में बंगाल विभाजन के विरोध के फलस्वरूप उपजे जन–आंदोलन में अरविन्द घोष के संपर्क में आने से इनमें क्रांतिकारी विचारों की भावना उत्पन्न हुई। 1908 ई० में मिस्त्र, सीरिया एवं तुर्की की यात्रा ने इनके क्रांतिकारी विचारों को और दृढ़ता प्रदान की। इसी बीच 1914 ई० में प्रथम विश्व युद्ध छिड़ जाने के कारण भयभीत अंग्रेजी सरकार ने इन्हें बंगाल छोड़ने का आदेश दिया। इसके उपरांत 1916 से 1920 ई० तक इन्होंने अपना निर्वासित–जीवन राँची में बिताया। निर्वासन का सदुपयोग करते हुए इन्होंने कुरान पर टीका लिखी जिसे 'तर्जुमान–उल–कुरान' के रूप में जाना जाता है। यह रचना विश्व प्रसिद्ध हुई।

असहयोग आंदोलन के दौरान गांधी जी से विमर्श करते हुए

इन्होंने आजादी की लड़ाई में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन, महात्मा गाँधी के संपर्क में आने के बाद, खिलाफत आंदोलन से किया। खिलाफत आंदोलन गांधीजी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन के रूप में परिणत हो गया। मौलाना आजाद ने पूरी तन्मयता के साथ इस आंदोलन में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया। इसी सिलसिले में 1922 ई० में इन्हें पहली बार जेल की सजा हुई।

1923 ई० में मौलाना आजाद दिल्ली में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस के विशेष–अधिवेशन में सबसे कम उम्र के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मौलाना आजाद ने साइमन–कमीशन के बहिष्कार आंदोलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सविनय अवज्ञा आंदोलन में इन्होंने पंजाब और सीमांत क्षेत्र के मुसलमानों को आंदोलन में भाग लेने के लिए गांधीजी के निर्देशों पर संगठित किया।

1940 ई० में मौलाना आजाद काँग्रेस के रामगढ़ अधिवेशन में दूसरी बार अध्यक्ष बने। द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ जाने के कारण लगातार 1946 ई० तक काँग्रेस के अध्यक्ष बने रहे। इन्हीं के अध्यक्षीय कार्यालय में महात्मा गांधी के नेतृत्व में 'भारत छोड़ो आंदोलन' का आह्वान 8 अगस्त 1942 ई० को किया गया।

हिन्दु–मुस्लिम एकता के अग्रदूत

इन्होंने इस्लाम के साथ–साथ अन्य धार्मिक परंपराओं को भी अपना आदर्श माना। ये भक्ति–संतों और सूफियों की उदारता और समन्वय की भावना की भावना से भी प्रेरित थे। ये धर्म को जोड़ने वाली शक्ति के रूप में देखते थे। इनका मानना था कि सभी धर्मों का सार एक ही है और वह है ''सत्य''।

मौलाना आजाद राष्ट्रीय आंदोलन के जितने सशक्त सिपाही एवं प्रखर चिंतक थे उससे कहीं अधिक हिन्दू–मुस्लिम एकता एवं भारत की सांस्कृतिक समरसता के पक्षधर थे। मौलाना आजाद भारतीय संस्कृति की विशिष्टता, ''विविधता में एकता'' में अटूट विश्वास रखते थे। इन्होंने आजादी के बाद ''भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्'' की स्थापना की।

शिक्षा मंत्री के रूप में मौलाना आजाद (कार्यकाल 1947–1958 तक)

मौलाना आजाद न सिर्फ राष्ट्रीय आंदोलन के महान नेता थे बल्कि शिक्षा मंत्री के रूप में आजादी के पूर्व एवं पश्चात् भी सक्रिय रहे। अपने कार्यकाल में मौलाना आजाद ने भारत की शिक्षा एवं सांस्कृतिक नीति की रूपरेखा प्रस्तुत की एवं इसके विकास के लिए कई महत्वपूर्ण संस्थाओं की स्थापना की, जैसे – विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग, सेकेण्ड्री शिक्षा आयोग, भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, आई० आई० टी० खड़गपुर, दिल्ली पब्लिक पुस्तकालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, संगीत नाटक अकादमी, ललित कला अकादमी, साहित्य अकादमी आदि।

मौलाना आजाद ने युवाओं को गुणवत्तापूर्ण एवं तकनीकी शिक्षा प्रदान करने पर बता दिया। इन्होंने शारीरिक शिक्षा के माध्यम से युवाओं के बहुमुखी विकास पर जोर देते हुए 1954 ई० में दिल्ली में प्रथम 'कॉउसिंल ऑफ स्पोर्ट्स' का आयोजन किया। इन्होंने प्रौढ़–शिक्षा कार्यक्रम को भी विशेष महत्व दिया।

मौलाना आजाद ने आजीवन नैतिक मूल्यों का निर्वहन किया। इनका जीवन अत्यंत सरल था। वे दिल्ली के जिस सरकारी आवास में रहते थे, वह आवास अब उपराष्ट्रपति का आवास है। मौलाना आजाद के शौक सीमित थे लेकिन वे संगीत का व्यावहारिक आनंद उठाना नहीं भूलते थे। वे सितार वादन में दक्ष होने के साथ ही मुगल चित्रकला शैली के अच्छे जानकार भी थे। ये आम लोगों की सेवा के प्रति सदैव तत्पर रहे। इन्हें एक सच्चे भारतीय होने पर गर्व था।

मौलाना आजाद की मृत्यु 22 फरवरी 1958 ई० को दिल्ली में हुई और जामा मस्जिद के पास ही इनका 'मजार' अवस्थित है। मरणोपरांत 1992 ई० में भारत सरकार के द्वारा इन्हें 'भारत रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

अभ्यास

1. सही या गलत बताएँ –

क. मौलाना आजाद का जन्म 1888 ई० में कलकत्ता में हुआ था।
ख. मौलाना आजाद मुस्लिम नेशनलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष रहे थे।
ग. खिलाफत आंदोलन का आरंभ 1921 में हुआ था।
घ. प्रथम विश्वयुद्ध 1914 में प्रारंभ हुआ।
ड. मौलाना आजाद का संबंध बंगाल के क्रांतिकारियों के साथ रहा था।

2. निम्नलिखित तिथियों के साथ घटनाओं का मिलान करें –

क.	1888	i.	मौलाना अबुल कलाम आजाद की मृत्यु।
ख.	1897	ii.	मौलाना आजाद का जन्म।
ग.	1923	iii.	मौलाना आजाद का भारत आगमन।
घ.	1947	iv.	मौलाना आजाद पहली बार काँग्रेस अध्यक्ष बने।
ड.	1958	v.	मौलाना आजाद पहली बार शिक्षा मंत्री बने।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें –

क. मौलाना आजाद पहली बार ..... में इंडियन नेशनल काँग्रेस के अध्यक्ष निवार्चित हुए।
ख. हिन्दू–मुस्लिम एकता को मौलाना आजाद ने ..... महत्वपूर्ण माना।
ग. दिल्ली पब्लिक पुस्तकालय की स्थापना ..... ने की।

4. निम्नलिखित प्रश्नों में प्रत्येक के साथ चार वैकल्पिक उत्तर दिये गये हैं। इनमें सही उत्तर को चुनें।

क. बंगाल का विभाजन किस वर्ष हुआ ?
(i) 1902 (ii) 1905 (iii) 1907 (iv) 1909

ख. मौलाना आजाद की मृत्यु कहाँ हुई।
(i) कलकत्ता (ii) राँची (iii) दिल्ली (iv) कराची

5. आइये विचार करें (अधिकतम 50 शब्दों में उत्तर दें)।

i मौलाना आजाद के प्रारंभिक जीवन के बारे में आप क्या जानते हैं ?
ii शिक्षा मंत्री के रूप में मौलाना आजाद के योगदान की चर्चा करें।
iii मौलाना आजाद के जीवन मूल्य और संदेश का संक्षिप्त में वर्णन करें।
iv मौलाना आजाद देश विभाजन के विरोधी क्यों थे ?

6. आइये करके देखें

- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में मौलाना आजाद के योगदान पर अपनी कक्षा के छात्रों के साथ मिलकर चर्चा करें।